छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा की कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)
के कला संकाय के अंतर्गत हिन्दी विषय में
पी- एच.डी. उपाधि
हेतु प्रस्तावित

शोध–रूपरेखा

2016

शोध निर्देशक
डॉ अर्चना झा
विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग)
सहायक प्राध्यापक
श्री शंकराचार्य महा.
जुनवानी, भिलाई (छ.ग.)

सहनिर्देशक
डॉ. अभिनेष सुराना
प्राध्यापक
शा. वि.या.ता.स्नात.
महा.,दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी
भगवती साहू

प्राचार्य

==========

शोध केन्द्र
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर (स्व.)
महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा की कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध रूपरेखा –

1. प्रस्तावना
2. शोध का महत्त्व
3. संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन
4. शोध का उद्देश्य
5. प्रस्तावित शोध प्रविधि
6. परिकल्पना : अपेक्षित परिणाम
7. अन्वेषित की जाने वाली समस्याएँ
8. शोध का अध्यायीकरण

शोध का शीर्षक :–

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा की कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन

1. प्रस्तावना :–

किसी भी देश की सामान्य जनता अपने वातावरण तथा रूचि के अनुकूल विनोद का साधन स्वभावतः निकाल ही लेती है। इन साधनों में नाटक का स्थान उसी प्रकार सर्वश्रेष्ठ माना जाता है, जिस प्रकार पठित समाज में साहित्य का। नाट्य शास्त्र में लोकचेतना को नाटक के लेखन और मंचन की मूल प्रेरणा माना गया है।

संस्कृत नाटकों का युग ढलने लगा, चौदहवीं शताब्दी तक उनका स्थान विभिन्न भारतीय भाषाओं के लोकनाट्यों ने ले लिया। अलग–अलग प्रदेशों में लोकनाटकों को भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता है। इन लोकनाटकों में रामलीला–उत्तरी भारत में, जात्रा–बंगाल, उड़ीसा व पूर्वी बिहार में, तमाशा–महाराष्ट्र में, नौटंकी–उत्तरप्रदेश राजस्थान में, यक्षगान–कर्नाटक में, थेरूबुद्दू–तमिलनाडू एवं नाचा–छत्तीसगढ़ में प्रमुख हैं।

लोकनाट्यों की भाषा बड़ी सरल तथा सीधी–सादी होती है जिसे कोई भी अनपढ़ व्यक्ति बड़ी आसानी से समझ सकता है।

लोकनाट्य में साज–सज्जा या रंगमंचीय आवश्यकताएँ अनिवार्य नहीं होती। लोकजीवन के विविध पक्षों जैसे सुख–दुख, हर्ष–विषाद, उत्साह, वीरता, करूणा आदि भावों को बिना किसी दुराव–छिपाव के प्रदर्शित करना ही लोकनाट्य की पहचान है। ग्रामीण अंचलों में ये आज भी आनंदोपलब्धि का सशक्त साधन है।

छत्तीसगढ़ व्यापक रूप से गाँवों, कस्बों का प्रदेश है। यहाँ की संस्कृति 'लोक' की संस्कृति है, जो जन–जातीय भू–भागों में अपनी पृथक सांस्कृतिक अस्मिता के साथ संरक्षित है।

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य 'नाचा' अपने मूल रूप में हास्य–व्यंग्य के माध्यम से गंभीर सामाजिक समस्याओं को सामने रखता है। कलाकारों की सामाजिक चेतना कलारूप में आस–पास के जीवन के यथार्थ को व्यक्त कर देती है।

लोकमंडलियाँ अपनी जरूरतों के अनुसार परिवर्तन कर रही है, उसके दर्शक समूह भी अब बदलती हुई रूचि में है।

पौराणिक कथाओं के प्रति श्रद्धा, ऐतिहासिक कथानकों के प्रति कौतूहल की भावना और समसामयिक स्थितियों के आधार पर समाज की मांग के अनुसार जनजीवन में घटित स्थिति के अनुरूप कथा का गठन किया जाता है।

नाचा के कलाकार अपनी आंचलिक भाषा व लोक शैली के माध्यम से बिना किसी आकर्षक सजावट के आडम्बर–हीन मंच गाँव के चौपालों, मंदिरों या किसी खुले मैदान में अपने अभिनय का रसास्वादन दर्शकों को कराता है।

'रहस' रास का छत्तीसगढ़ी रूपान्तरण है। संगीत, नृत्य–प्रधान कृष्ण का विविध लीलाभिनय। बैठे साज में आयोजन वैयक्तिक एवं खड़े साज का आयोजन सामूहिक होता है। नाचा एवं रहस को नृत्य प्रधान लोकनाट्य के रूप में तथा गम्मत को प्रहसनात्मक लोकनाट्य की श्रेणी में रखा जाता है।

वर्तमान में गम्मत विभिन्न नाचा–पार्टियों में कथानकों की संयुक्त प्रस्तुति देते है। स्थानीय लोकधुनों के साथ गाये लोकगीतों एवं नृत्य की एकरसता को तोड़ने के लिए बीच में गम्मत का आयोजन छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य 'नाचा' को सम्पूर्णता प्रदान करता है।

नाचा के विकास क्रम को आदिकाल, उत्कर्षकाल, संघर्षकाल एवं प्रतिस्पर्धाकाल के रूप में विभाजित किया जा सकता है। 20वीं सदी के अंतिम तीन दशक छत्तीसगढ़ रंगकर्म के इतिहास में युगान्तकारी दौर के रूप में याद किये जाएंगे।

ये काल–क्रमानुंसार तत्कालीन समाज के सामाजिक, राजनैतिक,सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं समसामयिक घटनाओं का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करते है तथा इन लोकनाट्यों में संगीत, नृत्य, हास्य विनोद, मुक्त रंगमंच, दर्शकों का साथ, अभिनय में अनौपचारिकता बोलचाल की सजीव संवाद शैली एवं दर्शकों में पारस्परिक सहयोग जैसी नाट्य विशेषताओं ने लोकरंगमंच को सशक्त बनाया है।

'नाचा' का उद्देश्य मनोरंजन के साथ जनजीवन को सही दिशा दिखाना होता है। नाचा की प्रस्तुतियों में सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, धार्मिक कथाएँ, ऐतिहासिक एवं काल्पनिक कथ्य, प्रेम प्रसंग एवं समसामयिक जीवन के यथार्थ के आधार पर कथावस्तु तैयार किये जाते हैं।

छत्तीसगढ़ में ख्याति–लब्ध लोकनाट्य मंडलियाँ चंदैनी गोंदा, कारी, सोनहा–बिहान, नवा–बिहान से लेकर रवेलीनाचा पार्टी, रिंगनी–साज, खल्लारी नाचा, रायखेड़ा नाचा पार्टी, मटेवा नाचा पार्टी, ममा–भांचा नांचा पार्टी महासमुंद, छत्तीसगढ़ लोककला नाचा पार्टी बालोद आदि ने अपने अंचल की सीमाओं को लाँघकर प्रदेश, देश और अंतराष्ट्रीय सांस्कृतिक मंचों तक ख्याति प्राप्त की है।

इन नाचा–पार्टियों में सरल–सहज संवादों के माध्यम से समसामयिक समस्याओं का मंचन जनता के समक्ष प्रस्तुत होता है। रोजमर्रा के जीवन और उनकी सम्पूर्ण संस्कृति से समन्वित कथ्य ही छत्तीसगढ़ी नाचा में गुंथा हुआ मिलता है।

2. शोध का महत्त्व :–

शोध शब्द 'शुद्ध' धातु से निष्पन्न है, जो संस्कार, शुद्ध या शोधन प्रक्रियाओं और संशोधन से समीकृत है। शोध स्थूल भी होता है और सूक्ष्म भी, लेकिन इसकी गति स्थूल से सूक्ष्म की ओर होती है जो मनुष्य के बाह्य और आंतरिक विकास की श्रृंखला को संजोती है। शोध का महत्व समीक्षा–विधा को द्विगुणित करना और उसकी प्रमाणिकता को संजोना भी है।

प्रस्तुत शोध कार्य छत्तीसगढ़ की सांस्कृतिक धरोहर 'नाचा' की प्रस्तुतियों में कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन कर उन्हें लिखित रूप प्रदान करने में एवं यहाँ की लोक संस्कृतियों में लोक जीवन को आंकने में महती भूमिका का निर्वहन करेगी।

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एवं विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण अध्ययन :–

साहित्य अवलोकन द्वारा विभिन्न ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन करने में सुविधा होती है तथा विषय से संबंधित सामग्री की जानकारी होती है। किस ग्रंथ में किस प्रकार की जानकारी मिलेगी तथा साथ ही विभिन्न ग्रंथों में कौन सी समस्या को उजागर किया गया है, या कौन से महत्वपूर्ण तथ्य को विस्तृत किया गया है, आदि की जानकारी होती है। साहित्य अवलोकन ज्ञान प्राप्ति का महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। इसी संदर्भ में शोधार्थी द्वारा कुछ ग्रंथों एवं शोध प्रबंधों का अध्ययन किया गया है, जो इस प्रकार है :–

1. अग्रवाल, महावीर, छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा, श्री प्रकाशन, दुर्ग, 2011

प्रस्तुत सन्दर्भ ग्रंथ में छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसमें नाचा की अवधारणा, ऐतिहासिक संदर्भ उद्भव एवं विकास, आधुनिकता का प्रभाव, लोक चेतना के स्वर, वैशिष्ट्य, लोकमंगल की भावना कथ्य में मनोरंजन के साथ–साथ शिक्षा, सामाजिक विद्रूपताओं, विषमताओं, आचार–विचार आदि का उल्लेख किया गया है। यह शोधप्रबंध के लिए आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराती है।

2. तिवारी, नंदकिशोर, रहस, शान्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986

प्रस्तुत पुस्तक में छत्तीसगढ़ के प्रमुख लोकनाट्यों में रहस, गम्मत और नाचा का लोक–रंजन के महत्वपूर्ण नाट्यविधा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उद्गम और विकास पात्र और चरित्र, वेशभूषा, वाद्य एवं कुछ कथा प्रसंगों का वर्णन है। नाचा की कथावस्तु के संदर्भ में सामाजिक और राजनैतिक जागरूकता के साथ ही व्यंग्य–विद्रूप और सामाजिक परिवर्तन की भूख, आडम्बरों का भंडा–फोड़, निम्नवर्ग द्वारा संघर्ष एवं शोषण का वर्णन, अंधविश्वास एवं समाज में उत्थान–पतन का रेखांखन किया गया है।

3. अग्रवाल, महावीर, हबीब तनवीर का रंग संसार, श्री प्रकाशन, दुर्ग, 2006

प्रस्तुत संदर्भ ग्रंथ में महावीर अग्रवाल द्वारा प्रख्यात रंग निर्देशक हबीब तनवीर से ली गई साक्षात्कार का उल्लेख है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति की गतिशीलता, हबीब तनवीर का रंग संसार नाचा कलाकारों की विलक्षणता, जमादारिन एवं पोंगवा–पंडित में शोषण और उत्पीड़न के बारे में वर्णन है। जो शोधार्थी को कथावस्तु के संबंध में आवश्यक जानकारी प्रदान करती है।

4 गुप्त, महेश, लोक साहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, 2008।

प्रस्तुत संदर्भ ग्रंथ में लोक नाट्य की आवश्यकता, स्वरूप एवं लक्षण संक्षिप्त रूप में उपलब्ध है।

5 अंकुर, देवेन्द्रराज, रंगमंच का सौन्दर्य शास्त्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012

इस संदर्भ ग्रंथ में नाट्यालेख, अभिनय, प्रेक्षागृह, रचना प्रक्रिया एवं नाट्य कथावस्तु का विस्तृत विवेचन किया गया है। इसकी जानकारी संबंधित विषय हेतु पर्याप्त तो नहीं अपितु शोधार्थी को एक संक्षिप्त परिचय प्रदाय करने हेतु संतोषजनक अवश्य है।

6 अग्रवाल, महावीर, लोक संस्कृति के आयाम एवं परिपेक्ष्य, श्री प्रकाशन,संस्करण 1993

प्रस्तुत सन्दर्भ ग्रंथ में लोकसंस्कृति एवं लोकजीवन के सन्दर्भ में विभिन्न लेखकों के विचारों का संग्रह किया गया है। इसमें छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य 'नाचा' के बदलते स्वरूप का संक्षिप्त में उल्लेख किया गया है।

7 शर्मा, जनकबाला, लोकनाट्यों की परम्परा में छत्तीसगढ़ी लोकनाट्यों का अनुशीलन, 1978

प्रस्तुत शोध प्रबंध में भारत के प्रमुख लोकनाट्यों के साथ, छत्तीसगढ़ी लोकनाट्यों का विस्तृत वर्णन किया गया है। नाचा–गम्मत के संबंध में प्रमुख रूप से जानकारी प्राप्त होती है, जिस बाबत् शोधार्थी द्वारा विस्तृत जानकारी प्राप्त करना अपेक्षित है।

8 ओझा, दशरथ, हिन्दी नाटक उद्‌भव एवं विकास, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 2012

इस सन्दर्भ ग्रंथ में नाट्य का समाज में स्थान, रास के स्वरूप , पात्रों का चरित्र चित्रण एवं प्रस्तुतीकरण की कला का विस्तृत विवेचन किया गया है। कथावस्तु के संबंध में आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराती है।

9 मानस, जयप्रकाश, छत्तीसगढ़ की लोककथाएँ, हर्ष पब्लिकेशन, दिल्ली, 2011

इस सन्दर्भ ग्रंथ में छत्तीसगढ़ के लोक संस्कृति का संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जिस बाबत् शोधार्थी द्वारा जानकारी प्राप्त करना अपेक्षित है।

10 साहू, बलदाऊराम, छत्तीसगढ़ी भाषा परिवार की लोककथाएँ, सरयू प्रकाशन, 2011

इस सन्दर्भ ग्रंथ में छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक परिवेश की संक्षिप्त में जानकारी है जो संबंधित विषय के लिए आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराती है।

11 पाठक, विनय कुमार, छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन, भावना प्रकाशन, 1983

इस सन्दर्भ ग्रंथ में छत्तीसगढ़ के लोकसाहित्य का विस्तृत विवेचन किया गया है। शोधार्थी द्वारा विस्तृत जानकारी प्राप्त करना अपेक्षित है।

12 खेमानी, कुसुम, रंगानुभूति और रंगमंचीय परिवेश, (हिन्दी नाटक के पांच दशक) राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली , 2011

कुसुम खेमानी द्वारा रचित इस कृति में रंगमंचीय परिवेश एवं नाटककार की रचना प्रक्रिया का विस्तृत विवरण दिया गया है। कथानक के संबंध में शोधार्थी द्वारा विस्तृत जानकारी प्राप्त करना अपेक्षित है।

पत्र–पत्रिका

1. तिवारी, संजीव, लोकरंजनी लोकनाट्य : नाचा, दैनिक भास्कर, बिलासपुर, 30 मार्च, 2011

   प्रस्तुत प्रकाशित लेख में नाचा के उद्‌गम और विकास में नाचा के स्वरूप, प्रारंभिक प्रस्तुति, विकास और संजोने हेतु किये गए कार्यो का वर्णन किया गया है। नाचा की प्रारंभिक प्रस्तुतियों में छोटे–छोटे गम्मतों के साथ ब्रहमानंद भजन, कबीर का निरगुनिहा भजन, करमा, ददरिया आदि के माध्यम से लोगों के मन में उत्साह का संचार, नाचा में अभिव्यक्त गम्मतों में जीवन के अनुभव, पीड़ा, जीने की कला, संघर्ष, विरोध एवं व्यंग्य, मनोरंजन और लोकजीवन की मजबूत अभिव्यक्ति को प्रमुख कथ्य के रूप में उल्लेख किया गया है।

2. यादव, पीसीलाल, लोकनाट्य नाचा में साखी परंपरा, उदंती, रायपुर, 20 जुलाई 2015

   प्रस्तुत प्रकाशित लेख में छत्तीसगढ़ के लोकजीवन का सर्वाधिक लोकप्रिय कलारूप लोकनाट्य नाचा में मानव जीवन का माधुर्य, परस्पर प्रेम, अनुशासन साहचर्य, समरसता, सहयोग आदि का साखी परंपरा में प्रस्तुति का उल्लेख किया गया है।

3. **महावार, निरंजन, छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य, अभिव्यक्ति, प्रकाशन–प्रवीण सक्सेना, 12 मार्च 2012**

प्रस्तुत प्रकाशित आलेख में छत्तीसगढ़ के रायपुर धमतरी, महासमुंद, दुर्ग, राजनांदगांव में नाचा की व्यापकता तथा विशेषताओं का उल्लेख किया गया है।

4. शोध का उद्देश्य :–

विषय चयन में शोधार्थी का मुख्य उद्देश्य समकालीन दौर में छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य 'नाचा' में कथावस्तुओं की प्रस्तुतियों का समीक्षात्मक अध्ययन कर उसका संकलन, मनन और विश्लेषण करना है। वस्तुतः अध्ययन के लिए चयनित विषय के पीछे एक मौलिक शोध कार्य करने की इच्छा थी। छत्तीसगढ़ की लोक सांस्कृतिक धरोहर 'नाचा' की विभिन्न पार्टियों द्वारा प्रस्तुत कथावस्तुओं का संकलन कर उसे लिखित रूप प्रदान करने का उद्देश्य भी एक प्रधान कारक है।

प्रारंभिक दौर में ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजनार्थ लोक–कलाकार 'नाचा–गम्मत' साज तैयार करते थे। वाद्ययंत्रों के रूप में चिकारा, तबला और मंजीरा हुआ करता था। दो कलाकार जोक्कड़ (विदूषक) की भूमिका में तथा पुरूष पात्र ही स्त्रीपात्र (जनाना) की भूमिका का निर्वहन करते थे। विदूषकों का प्रमुख उद्देश्य दर्शकों को हंसाना होता था।

खुले आकाश के नीचे बिना किसी रंगमंचीय ताम–झाम के सीधे–सादे वेशभूषा में लोक कलाकार अपनी कल्पनाओं और अनुभवों के माध्यम से कथावस्तु का रूप तैयार कर प्रतिदिन घटने वाली घटना, परंपरा, रीति–रिवाज, संस्कृति, रूढ़ियों व लोकविश्वास को अभिनय के रूप में प्रस्तुत करते थे।

असंगठित नाचा मंडलियों के बिखरे कलाकारों को संगठित कर मंडली या पार्टी या साज नाम देकर अपनी पहचान बनाने का महत्वपूर्ण कार्य दाऊ दुलारसिंह मंदराजी, दाऊ रामचन्द्र देशमुख, दाऊ महासिंग चन्द्राकर आदि ने किया। उन्होंने नाचा–पार्टियों को और अधिक परिमार्जित कर छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक परचम को लहराने का भगीरथ प्रयास किया।

लोकनाट्य 'नाचा' में जीवन के विविध पक्षों जैसे सुख–दुख, हर्ष–विषाद, उत्साह–वीरता, प्रेम आदि को घटना को मंचन कर लोगो के हृदय के अत्यधिक निकट जाना लोक कलाकारों का प्रमुख उद्देश्य होता है।

नाचा का प्रमुख उद्देश्य :–

1. छत्तीसगढ़ी लोककला का संरक्षण, संवर्द्धन एवं प्रचार–प्रसार करना।
2. हास्य के माध्यम से श्रम–जीवियों का मनोरंजन करना।
3. छत्तीसगढ़ की जीवन शैली को प्रस्तुत करना।
4. समाज की मांग के अनुसार जनजीवन में घटित स्थितियों के अनुरूप कथावस्तु का गठन करना।
5. सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं समसामयिक घटनाओं का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करना।
6. गंभीर सामाजिक समस्याओं का मंचन कर समाज में चेतना उत्पन्न करना।
7. नाचा को विश्व–रंगमंच में प्रतिष्ठित करना।

5. प्रस्तावित शोध–प्रविधि :–

किसी भी शोध–प्रबंध की सफलता बहुत कुछ शोधार्थी द्वारा अपनायी गयी शोध–प्रविधि पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध–प्रबंध के अंतर्गत शोधपद्धतियों के मापदण्ड के अनुरूप प्रस्तुत शोध कार्य में उपयोगितानुसार कार्य होगा। मूल–स्त्रोतों एवं द्वितीयक स्त्रोतों के अतिरिक्त मौखिक इतिहास, साक्षात्कार, समय–समय पर प्रकाशित पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, विभिन्न नाचा पार्टियों की प्रस्तुतियों में कथावस्तु का लेखन आदि का शोध विषय के अनुरूप विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक एवं व्यापक ढंग से प्रयोग किया जाएगा। शोध कार्य को सकारात्मक रूप प्रदान करने के लिए शोधार्थी द्वारा, प्रकाशित पुस्तकों एवं शोध प्रबंधों का अध्ययन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त अप्रकाशित शोध–प्रबंधों, अप्रकाशित पुस्तकों, दस्तावेजों, पत्र–पत्रिकाओं से विषय के संबंध में उपलब्ध स्त्रोतों का अध्ययन किया जाएगा।

6. परिकल्पना : अपेक्षित परिणाम

शोध परिकल्पना एक ऐसा विचार, पूर्वानुमान या कल्पनात्मक विचार होता है, जो कि अनुसंधानकर्ता अनुसंधान समस्या के बारे में अनुसंधान से पूर्व बना

लेता है। अनुसंधान के दौरान वह उसकी सार्थकता की जाँच करने हेतु आवश्यक तथ्यों को एकत्रित करता है।

परिकल्पना अनुसंधानकर्ता को मार्गदर्शन प्रदान करती है। इसके द्वारा क्षेत्र उद्देश्य और दिशा पहले से ही निर्धारित हो जाते है।

अनुसंधान एक लंबी प्रक्रिया है, ऐसी स्थिति में आवश्यक होता है कि शोधार्थी परिकल्पना के द्वारा मुख्य–मुख्य बातों को अपने शोध–प्रबंध में स्थान दे।

संबंधित विषय पर शोध को आधार प्रदान करने हेतु शोधार्थी की कुछ परिकल्पनाएँ है :–

1. लोकनाट्यों में स्थानीय लोक जीवन की परम्पराओं, उनके रहन–सहन, रीति–रिवाजों और क्रिया–व्यापारों की स्पष्ट छवि दिखाई देती है।
2. छत्तीसगढ़ की लोक कलाओं में लोकनाट्य नाचा–गम्मत की भूमिका महत्वपूर्ण है।
3. लोकनाट्य नाचा काल–क्रमानुसार तत्कालीन समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं समसामयिक घटनाओं का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करता है।
4. कई वर्षो से छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में विभिन्न पर्व, उत्सव एवं शुभ अवसरों पर मनोरंजन का एकमात्र साधन 'नाचा–गम्मत' रहा है।
5. 'नाचा' गीत, संगीत के साथ अभिनय का समन्वित रूप है।
6. 'गम्मत' की प्रस्तुति पृथक न होकर नाचा के पूरक के रूप में लिया जा सकता है।
7. नाचा को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्रदान करने में अनेक लोक कलाकारों एवं नाचा मंडलियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

अन्वेषित की जाने वाली समस्याएँ :–

प्रस्तुत परियोजना कार्य में नाचा की समकालीन प्रस्तुतियों में कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन करने के क्रम में निम्नलिखित समस्याओं पर विमर्श प्रस्तावित है :–

1. छत्तीसगढ़ में नाचा के स्वरूप एवं लक्षण क्या है ?
2. नाचा की प्रस्तुतियों का प्रमुख आधार क्या होता है ?

3. नाचा में प्रस्तुत समकालीन कथावस्तु से समाज में क्या बदलाव हो सकता है ?
4. नाचा को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्रदान करने में लोक कलाकारों की क्या भूमिका रही है ?
5. नाचा की कथावस्तु में आधुनिक चेतना तथा समकालीन जीवन स्थितियों का क्या प्रभाव पड़ता है ?

तथ्य संकलन के साधन –

प्रस्तुत परियोजना कार्य में तथ्य संकलन हेतु निम्न साधनों का उपयोग किया जा सकता है –

- पुस्तकालय
- पत्र–पत्रिकाएँ
- शोध–ग्रंथों का निरीक्षण
- साक्षात्कार या भेंटवार्ता
- इन्टरनेट से प्राप्त स्त्रोत
- ऑडियो–वीडियो कैसेट्स

छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा की कथावस्तु का समीक्षात्मक अध्ययन

अध्यायीकरण :–

भूमिका :–

अध्याय 1 लोकनाट्य :– स्वरूप एवं लक्षण

1.1 लोकनाट्य के स्रोत
1.2 प्रांतों में लोकनाट्य का स्वरूप

अध्याय 2 छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य

2.1 गम्मत

2.2 नाचा

2.3 रहस

2.4 छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य का वैशिष्ट्य

अध्याय 3 छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा का विकास–क्रम

3.1 प्रारंभिक काल

3.2 विकास काल

3.3 संघर्ष काल

3.4 प्रतिस्पर्धा काल

अध्याय 4 पारंपरिक 'नाचा' के कथानक का स्वरूप

4.1 सामाजिक एवं आर्थिक दशाओं पर आधारित कथ्य

4.2 धार्मिक एवं पौराणिक कथाओं पर आधारित कथावस्तु

4.3 प्रेम प्रसंगों पर आधारित कथानक

4.4 ऐतिहासिक प्रसंगों एवं कल्पनाओं पर आधारित कथ्य

4.5 समसामयिक यथार्थ पर आधारित कथानक

4.6 प्रेरक, नीतिगत तथा आदर्शपरक कथ्य

अध्याय 5 समकालीन दौर में नाचा प्रस्तुतियों में कथावस्तु

5.1 परिचयात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन

अध्याय 6 'नाचा' की कथावस्तु में निहित आधुनिक चेतना तथा समकालीन जीवन स्थितियों का प्रभाव

6.1 सामाजिक चेतना

6.2 नारी चेतना

6.3 युग चेतना

उपसंहार

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रंथ

पत्र–पत्रिकाएँ

छाया चित्र

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. ओझा, मानधाता, हिन्दी नाट्य समालोचना, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, 1976
2. खेमानी, कुसुम, रंगानुभूति और रंगमंचीय परिवेश, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2011
3. चन्द्राकर, नवीन, कला एवं संस्कृति, अरिहन्त पब्लिकेशन, 2013
4. मानस, जयप्रकाश, छत्तीसगढ़ की लोककथाएं, हर्ष पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2011
5. साहू, बलराम, दाऊरामचन्द्र देशमुख, छत्तीस पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर, 2011
6. सिंह, रामकुमार, दाऊ महासिंग चंद्राकर, छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर, 2012
7. शर्मा, जनकबाला, लोकनाट्यों के सन्दर्भ में छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य का अनुशीलन, 1978 ।
8. अंकुर,देवेन्द्रराज, रंगमंच का सौन्दर्य शास्त्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012
9. गुप्त, महेश, लोकसाहित्य का शास्त्रीय अनुशीलन, नेहा प्रकाशन, दिल्ली, 2008
10. पाठक, विनय कुमार, छत्तीसगढ़ी साहित्य का ऐतिहासिक अध्ययन 1983
11. अग्रवाल, महावीर, छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा, श्री प्रकाशन, दुर्ग 2011
12. तिवारी, नंदकिशोर, रहस, शांति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
13. भारद्वाज, मदनमोहन, भारतीय नाट्य परंपरा और रंगभूमि, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
14. सिंह, माधुरी, लोक संस्कृति–शुद्धता और मिलावट, संपादक, महावीर अग्रवाल, श्री प्रकाशन, 1993
15. शर्मा, करूणा, डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का नाट्य साहित्य सामाजिक दृष्टि में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002
16. साहू, बलदाऊराम, छत्तीसगढ़ी भाषा परिवार की लोक कथाएं, सरयूप्रकाशन, 2011
17. तनेजा, जयदेव, मोहन राकेश–रंगशिल्प और प्रदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1996

18. मलिक, शान्ति, हिन्दी नाटकों की शिल्पविधि का विकास, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, 1971
19. साहू, बिहारीलाल, छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य और लोकसाहित्य, भावना प्रकाशन, 2003
20. शर्मा, पालेश्वरप्रसाद, छत्तीसगढ़ के तीज–त्यौहार और रीति–रिवाज ।
21. बेहार, रामकुमार, छत्तीसगढ़ संस्कृति और विभूतियाँ, छत्तीसगढ़ शोध संस्थान, रायपुर 2003
22. गुप्ता, मदनलाल, छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं लोकआयामक विभिन्न स्वरूप , भारतेन्दु साहित्य समिति, बिलासपुर, 2003
23. अग्रवाल, महावीर, हवीब तनवीर का रंगसंसार, श्री प्रकाशन, दुर्ग, 2006
24. देवांगन, रमेशचन्द्र, छत्तीसगढ़ समग्र संदर्भ ईशिता प्रकाशन, 2014
25. गुप्त प्यारेलाल, प्राचीन छत्तीसगढ़ पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर
26. यदु, सुशील, छत्तीसगढ़ के साहित्कार, छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति, रायपुर, 2001

पत्र–पत्रिकाएँ

1. शर्मा, अरूणेश कुमार, लोकनाट्य, दैनिक भास्कर प्रकाशन, 19 सितम्बर 2009
2. देशमुख, संतराम, विकास के क्रम में गम्मत–नाचा, हरिभूमि, चौपाल, प्रकाशन, 18 फरवरी, 2016
3. पाण्डेय, आरती, छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति के परिचायक नाचा, छत्तीसगढ़ विवेक, शोध पत्रिका, अंक 48, वर्ष 2014
4. साहू, दलेश्वर, लोकमंडई, लोकमंडई उत्सव समिति, आलीवारा, राजनांदगांव, 2001
5. साहू, दलेश्वर, लोकमंडई, लोकमंडई उत्सव समिति, आलीवारा,राजनांदगांव, 2003
6. शुक्ल, नवल, कला वार्ता, अंक 12, वर्ष 03
7. तिवारी, संजीव, लोकरंजनी लोकनाट्य : नाचा, दैनिक भास्कर, बिलासपुर, 30 मार्च 2011
8. यादव, पीसीलाल, लोकनाट्य नाचा में साखी परंपरा, उदंती, रायपुर, 20 जुलाई 2015

9. महावार, निरंजन, छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य, अभिव्यक्ति, प्रकाशन–प्रवीण सक्सेना, 12 मार्च 2012

प्रमुख छत्तीसगढ़ी नाचा पार्टियाँ :–

1. **माटी के सिंदूर,** छत्तीसगढ़ लाककला नाच पार्टी, होच्चेटोला, जिला–बालोद
2. **नारी के परीक्षा,** जय माँ शीतला नाच पार्टी, भानपुरी, जिला–धमतरी।
3. **दाई केकोरा**–जय छत्तीसगढ़ नाच पार्टी, नर सिंगपुर, जिला–रायपुर
4. **अड़ही डोकरी**, छत्तीसगढ़ नाच पार्टी, सुरजपुरा–बामी जिला–कबीरधाम
5. **एक दिन बहू के**, ममा–भांचा छत्तीसगढ़ी नाच पार्टी, खोकसा जिला–महासमुन्द
6. **रामू अउ श्यामू,** संत समाज नाचा पार्टी, लिटिया, सेमरिया,जिला–दुर्ग
7. **मैं नई जानव**, मोर मयारू नाच पार्टी, टीला फुण्डर, जिला–रायपुर
8. **तिरिया चरित्तर**, जय रानी मां नाचा पार्टी, भर्रीटोला जिला–कांकेर
9. **लमसेनीन बेटी**, माँ भवानी नाचा पार्टी, गिधवा, जिला–दुर्ग
10. **अंधरा के बिहाव**, सियान के नियाव, छोटकू बड़कू नाचा पार्टी,रंगकठेरा, जिला–राजनांदगांव
11. **दुल्हा डउका के नखरा**, जय सरस्वती नाचा पार्टी, बरही जिला–दुर्ग
12. **भाई–भाई में मया**, सत्य कबीर लोक नाचा, मटेवा जिला–दुर्ग
13. **भाई–बहिनी के मया**, छत्तीसगढ़ी लोक कला नाचापार्टी, हज्जूटोला–राजनांदगांव
14. **पारो के दिन बहुरिस**, जय छत्तीसगढ़ महतारी नाचा पार्टी, कुम्हारी, जिला–रायपुर
15. **मयारू बहिनी**–पुन्नी के चंदा नाचा पार्टी, मोपर जिला–बलौदाबाजार

16. **अबला नारी**, राधाकृष्ण नाच पार्टी, दुर्रे बंजारी जिला –राजनांदगांव

17. **लालच के फल**, जय कानाभैरा नाचा पार्टी, भाजी पाला ओड़िशा

शोध निर्देशक	सहनिर्देशक	शोधार्थी
डॉ अर्चना झा	डॉ. अभिनेष सुराना	भगवती साहू
विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग)	प्राध्यापक	
सहायक प्राध्यापक	शा.वि.या.ता.स्नात.	
श्री शंकराचार्य महाविद्यालय	महा.,दुर्ग (छ.ग.)	
जुनवानी, भिलाई (छ.ग.)		

प्राचार्य